

जा ४
विया
मामा

सार्द्धं गुंथिद्वयं द वि. नागपागं प्र कीर्तित ॥ सार्द्धं गन्ति गुर्यं द वि कुं
कुर्यं किं ॥ प्र कीर्तित ॥ वृं कं गुं थ्री सर्व कं म साधय त्यत्र म
नि। नागपा। अकू प्र क मः दे ध र्यं पत्रि कीर्तित ॥

१३८ पुर चरण प्रयोग

आभार नमस्ते
ASIA ARCHIVES

3145

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गुणवत्तमं ॥ अथ पूज्यं नृपयोगशा ॥ नृप
सत्त्वका गुणसंपूज्या नृदाहं गच्छीयात् ॥ गुणो नृपसन्निधानं नृपत्वात्
रूपं दं वाह्यं ॥ नृपसन्निधानं मनसा नृदाहं गच्छीयात् ॥ नृप
ज्ञानविद्वान् नृपकर्म ॥ पवित्रं गच्छीयात् ॥ नृपसन्निधानं विद्यार्थको यो सायक
पञ्चनाश्रुद्विगुणं ॥ नृपसन्निधानं नृपदो नृपद्वयमिदं नृपदीप
नृपार्थपर्वनादो यत्पुष्पं ॥ नृपसन्निधानं नृपद्वयमिदं नृपदीप

अथर्वविद्यन्तु न त्मन्मुखं पीगीतजना नपमहं मलुपं कथ्या न ॥ नदी
 नीनं पवनं पूज्या दाव न्यान् कूर्मचक्रं चिन्तनीयां ॥ ननु मलुपं वंदी च नु
 नसां कूर्चनि ॥ ॥ अथ पूज्य नलम नम्रुदिगीयदिनं क्रीनादि कंक
 लं करुमिष्टां कूर्चनि ॥ नत्प नदिनं यज्जल्लसत्पत्तव म्बवम्रुका
 लमन्य नमस्य दल कील कान विगु स्तिमिगान सस्वां म्वाद्य पूर्व वि
 चात्रिनां रुमिं मनसि निषाय ज्जमूक मन्तु म्पूज्य नलसिद्धयं

ममैयंग्रकनैरुमिर्मन्तामसिद्धनामिनिरुमिपत्रिग्रहकार्य
 ॥ ननस्मानकीलकानरुतित्यक्षरु नलनक्षदलं नक्षवापुत्यं
 कमहिमन्त्रादलदिक्कुं ऊँ यं चारु विष्णुकर्त्तादिविरूपा
 कनीरुगम॥ विष्णुरूगाय यं चान्यं मममन्त्रस्य सिद्धिषू ॥ २
 मयैतत्कीलिनैरुं पत्रित्यक्ष विदूतन॥ जूपसर्पन्तुनं
 सर्वं निर्विघ्नं सिद्धि न मुमं ॥ ॐ त्र्यम्बकं नमः ॥

॥ ॐ जम्बाय रुतिनिपत्यं कं पूजयन् ॥ ॐ सुदलनायाम्बाय रुति
 त्र्यम्बकं पूजयन् दित्यन्यं ननस्मान् पूर्वदिदिक्कुं कामं (लन्डादिं) दित्ता कपा
 लान् पूजयन् ॥ यथा ॥ ॐ ॐ न्दल्लो कपाल ॐ हा गच्छेत्ता वाक्कागन्ध
 दिरि ॥ पूजयन् ॥ नवमग्नादीन् यथादिनी ॥ वंदीम (ध्वजं) गुपा
 लादीन् पूजयन् ॥ यथा ॥ नीलाञ्जनाञ्चान्द निरुमग्नमपिस
 र्दकैर्न वक्ष्ये ग्लोचनमपातु गदा कपालं ॥ जलान् त्वयं मुकुटं

रहस्यलस्यदम्भं कुरुं लसद्गुणनं पुलमामिदं वी ॥ ॐ निष्कामा
 कुरुपाल ॐ हागयु ॐ स्वा वाक्पाद्यादिरि ४ सं पूज्या वाक्पुनस
 ॐ हागयु स्वा वाक्पाद्यादिरि नयय ॥ मिन्दु नारुं निनें गुं पपू
 रुवउ ० नं रु निस्स पदो दक्षि नं दनं पाना कूल सन्यु नूकन
 विलसद्दीउ पूनारि यालं ॥ वालं न्द्रा निमोर्लि कं कनिपनि
 वदनं दान पूनारु गनं रागीन्द्रा वद्ध मालि रुऊ गग लप ३

नका वम्भा सं नार्गी ॥ ॥ नर्वं भात्वा गलपनं ॐ हागयु ॐ स्वा
 वाक्पा २ गं गलपन येन स ४ ॥ ॐ निपाद्यादिरि ४ सं पूज्या पूजि
 न देवना स्थावलिं दद्यात् ॥ ॥ यथा ॥ नममा सरु का वलि नि
 न्द्राय लोकपालाय नमः ४ ॥ नवम म्नादिन वलि स्था दत्वा ॥
 ॥ ॐ नक्षत्रि विदुषि सै नरं २ रु अय रु अय २ नरु य २ वि
 पू २ मरु रु न व कुरुपाल वलिं ग द्वा २ स्वा हा ॐ स्वनं न कुरु

पालायनत्कनस्क कपालं वलिंदद्यात् ॥ नदीं वाम्मुपनृषा
 यगलपनयं च पूर्ववलिंदद्यात् ॥ जन्नादिरिग्यसंयुक्तं माष
 रुकादिसल्लिगं ॥ गृहानेमां मुनिं वृक्षान् वाम्मुदोषं पुला
 लय ॥ वाम्मुपनृषा ध्यानं त्र्यं कश्चिन्नमस्त्वाम्मुमूक्तानम
 सूनाकर्ति ॥ स्मरंस्त्वाम्मुमूक्तानम
 न ॥ जाननी कूप्यवासकं दिनिवानदगान् यो ॥ पिशा

४

नदपूठो गोद्यां निगोस्य दद्यात् ॥ ० ॥ ॐ यं गोडा गोद
 कम्मरित्ता गोदस्कान निवासिन ॥ मागगो पृथग्रूपा न्य ॥ ॐ
 नाम विपा न्य ॥ विष्णु रूपा स्था याम्यं न्यदि गिदि कूस
 मालिना ॥ सवर्तं पीतमनस ॥ पुनिगृह्णन्तु मे वलिं ॥ ॥ ॐ
 त्यनेन रूतं रूतं वलिन्दद्यात् ॥ रूगानि धानी रुवसन्ति रूतं
 न वलिं गृहीत्वा विधिवत्पुयुक्तं ॥ अन्यगु वासं पत्रिकल्प

यन्मुकुमन्मुगान्यगुनभासुगैर्य ॥ ॥ न्निषार्थ ॥ ह्नागाह्नागपाप
 क्रयार्थं नरुदेवतागयग्या ॥ सरुमुकुपां चिं चिकपापनक्षय
 मयगुप ॥ कार्य ॥ न्नागुगयगी घदसाविगीपत्रमें म न्व
 वदन्ति ॥ नगुम्मीनूदयो च्चार्थं पूनयत्र लमितिचिन्त्य ॥ नगसु
 दिनं उपवासं रुविष्ठा ॥ रौजनम्वा क्यार्थिना ॥ नग ॥ पत्रदिनं वाक्के
 मूहर्कं उत्थाय गुनूध्नानादि कं म्मीन्सं ध्नागर्षलसूर्यार्थि

गयगीकुपान्कं कर्मकलार्थं समाप्ररुगापसात्रलपून्पौरु वा
 यर्न थाप्या ॥ न्निग ॥ रत्सं रुत्थं त्यादिनमू कसन्नुसिद्धि का
 मोद्यान त्यामू कसन्नुस्य न्नामं वगत्सं रक्ता उपरुदन्तं सदां म
 नदन्तं सगर्षल नदन्तं सारिषं कनदन्तं स वाक्कल रौज
 नात्मक पूनयत्र लमर्क कनिष्ठा ॥ ॥ न्निमकृत्पं क्यार्थिना ॥
 पूजागुति सन्ध्यां कार्या ॥ पानमुगैं संकृपं लेवगुनं नत्वा

यत्प्रकाशमनं यत्प्रकाशमालयाभं नमन्यलं पयनं मधुमा
 कुष्ठया (गनमधुदिनान्कं ऊर्पं कुर्यात् ॥ यत्प्रकाशमालानल
 दायनं नकनावावर्गं नकुठमिरत्प्रकाशयनेन ॥ यदि त्वत्तं कौ
 (लेवनकवागमं वपूजाक्रियेन नदायत्प्रकाशपूविका नं ऊ
 प४ ऊपानं यत्प्रकाशविधिपूजं ऊकाया ऊपन्यपुत्पदं तुल्य
 संख्या ४॥ नागि दुर्गा नागि विलसित ४॥ नृकनाकनसंयुक्ता

३

नृकाययिर्नंदवगायु नमन्नालमनेरुक्ता वयनाकार्य ४ वा
 यिकउर्पा नुम्मानिमल्लभरुनालनं (प्र४ ऊप कालं पतिगान्त्य
 आगिदलनं नत्सम्काष (लग्नदा वत्प्रव (लाकुरं २ स्पल्लस्पल्ल
 नृक्षवायुत्पा (गगद्दकायां पा लायामधुन्यन्यासावाच
 मनस्यदलनं कल्लस्पल्लनिं वा कन्या ऊर्पेन ॥ माक्रानिकक
 टको अककानल्लडकपिधनालं दलनं नृवेमनं कल्लस्प

+

लम्बा कला ऊपंग स्प (ल विस्त्रा ला ऊपंग ॥ उ वं ना श्री चीन क शु की
 नन ग ४ न म क कौ ल ४ न नू ला व न ४ ना प वि नु क न ४ ना गु वि ४
 न पु ल प न ना स न नू न्य ४ न ल या न ४ न ग क न न गु ४ न ४ न
 भा पा न र क ४ न पा व न ४ नि ना ४ न वा न ४ न या न पु सा नि न पा
 द ४ न पी ४ न क कं रा स न र ४ न क वा सा ४ न व दू वा सा ४ न वि
 न्मू गी र स क ल का य क ४ न म लि ना स न ४ न म ख दौ र्ग न्म

य क ४ न म लि न कं ल ४ ना ल स म द म न न ग न्दु नि क र न नि
 श्री व र न न र य न नी रा क स्प र (क प कं क च न न ऊं ऊ पंग ॥ ॥
 ना तु वि स्त्र न नान्ध की ले न या न न पु ल या या ॥ ॥ मान स ऊ
 पं रु न न नि य मा ४ न रु द लू स ना य का क न र ल न्ध प स म्भ
 न मान स ४ कि श्रि कु व ल यो ग्य ४ कि श्रि कि लो ष या न न ऊ
 न्य उ पा गु ४ न ग र क ल ऊं पी वा यि क ४ न स र्व म्भ न ऊ प

न्नाल्लामादिउपेनु विलेखस्तुगानस (न्ययवृत्तवयथावि
 श्विउपंकत्वादवस्यदकिंलरुसंदेवा न्यवामरुसंदेवा
 पंकपंसमर्पय (थाकाडवोनय (थाकर्मर्षयथाविधि
 शिदामंकयानिपुत्यरुं वानरुकापादलालामकार्य ८
 शादामाद्यल ४ जे वाक्क (लावावाक्क दीदिगु दीउंउपंक
 यानि ॥ प्रवक्रगिय ४ क्रगियायगिगु दीवे (न्यावेन्या वाद

तुगुलीनूडा नूडावापंचगु दीउपंकयानि ॥ स की लूम ४ लूडवत्क
 य ४ ॥ जलपनालकास्यरुउपवाक्क लरौंउनात्मकाद्यम्संव
 पूनन्यनदीन्यरुमगदनकल्पउपवाकत्वातप्यनंकयानि
 ॥ ॥ यथागीपकिंलं लंगडावेउलानक येसत्सम्भवंसकल्प
 नंदवगांउलंनेवपाद्यादिसर्वे वीपकानात्मकेनसंपूअपनि
 वानान्सरुसकत्संगप्रदेवगांय (थाकर्मर्षयन्ययन ॥

स्नानं गुग्गुलीनां जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो स्नानं म्लेच्छकृत्य
 षष्वाप्यादिरुयन् नून्यं निरुक्तं न निरुपद्रव्यं विगुं स्वर्किकं नदि
 नदं नान्क ४ पाणिनी पृथक् नदीनीनादिनिवालयविल्वण्य
 ल्पामलका न्यगुमूलं लल्ललाकुलमध्वं दं वायननं सम १०
 डकूलं विविक्ता द्यानं निरुक्तं रुद्या ॥ जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो
 स्नानं गुग्गुलीनां जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो स्नानं म्लेच्छकृत्य
 षष्वाप्यादिरुयन् नून्यं निरुक्तं न निरुपद्रव्यं विगुं स्वर्किकं नदि

कं मूककिर्नं मूलं नात्रिकं लं कदली लवली जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो
 स्नानं गुग्गुलीनां जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो स्नानं म्लेच्छकृत्य
 षष्वाप्यादिरुयन् नून्यं निरुक्तं न निरुपद्रव्यं विगुं स्वर्किकं नदि
 नदं नान्क ४ पाणिनी पृथक् नदीनीनादिनिवालयविल्वण्य
 ल्पामलका न्यगुमूलं लल्ललाकुलमध्वं दं वायननं सम १०
 डकूलं विविक्ता द्यानं निरुक्तं रुद्या ॥ जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो
 स्नानं गुग्गुलीनां जम्बूपात्रपूजयन् नलधम्मविगगादो स्नानं म्लेच्छकृत्य
 षष्वाप्यादिरुयन् नून्यं निरुक्तं न निरुपद्रव्यं विगुं स्वर्किकं नदि

माघा ४ ज्येष्ठ की मसूना ४ का डवायन का ४ ज्येष्ठि व निवेदिनयन का
स्यप्रागं शु अश्विनदि वा शु अश्विनज्जन्तपानादि कर्म मनुजफ
मने शु अश्विन (का न म स र म म द न का स्य कर्म का म ना गी न
वा या दि प्र व ल न स द न नि ग न्ध न ल प न पृ ष्ठ धा न ल नि ड ११
पुं द क स न न व ऊ र्ध्व ग न न न स न ग र श मी न या या क
न न यि मा या लु लु यि न म्मु ध न न का की नि रु य ४ न यी

गपु र्ण ल य नी य व र्ण काल यं न ॥ जप न दो द्या न ल प ल व म
दी न यं न ॥ श्री लू द या म्मु स वि न्दू गो क्ता न ४ पु ल व र्ण नी य ४ म्मु
रु ल दो द्या न ल व दू पु ला पं य पा ला या म्मु ष र्ण न्या म्मु य कं
क ल उ पं ग्मु स्ता न मा य म नं य म न्मु क्ता फ क ल न क य्मा न प र्ण
ग र्ण कं व लो म ल कं न वा स्ता या न न पु नि ग द्नी या न जे स
म्मु वं न दि न रं क्ता न प प्ता सा धे वा यं क्ता ल न गे द्नी

यागसद्वाक्कला नांशिकालीवारवेतपमानननु श्रीगजस
 विष्णवेधनपत्रित्वागनृपवृक्षयर्थे कृयागोमृत्तुपति
 नाविष्णुनासिके ४ सरुनसम्भ्राषंनाननननडि फ्रवदनकु
 पदामपूजादिषूनवदननित्यनेमिरु कंकवीननित्यं पानेका
 लीनगुनध्वानात्य कसेन्ध्रानप्यलसू यार्प्यगमयं यदी
 उपान्नं नित्यपूजा नित्यं होममन्त्रं न्यानेमिरु कंक निविधिल

12

षंपूजाविनेष ॥ गिसन्ध्रं स्नायादन्नाक पातन्मध्वद्रायासुगा
 पानक ४ पात ४ स्नायात्समर्थमि सन्ध्रं पूजा उपश्रु कृयाग
 ॥ उपश्रु पूजा श्रुत्येनपूजामिना उपनि षंध्र ॥ ग्रासमर्थमुच्य
 कदापूज श्रुतं नित्यं पश्रु देवतापूजनमपि नासि
 श्रानिध्वमादोसायं पानहोमादिवत्समर्थ ४ पुत्परुं किश्चि
 दद्यात् देवताकोणादि कप १० न ॥ नृगवसावन्नाध्वमा ४ म
 दि

नुवि (लघं यं यं वि (लघा सं नं न (ये व वि (धया ४ मन ४ सं रु
 न दी (लो यं मो नं म न्ना थ यि न न ॥ ब्रू वा य नु न नि च्च दी ऊ प सं प
 रि रु न व ४ ऊ प म्मु न कं व ल रु मो न दा नू ऊ स नं न वं ल नि मि
 रं न ल ना (ल न कू ल न्ना य रु लं नि मि रं न प ल्ल वं न कं व ल व म्मा
 स नी क च्च ल म्मु पु ल रु ४ ग गा पि व क ४ (ल ४ ४ म ग कि र्ण वा प्पे
 प्रा कि र्ण कू ल स नं य पु ल रु म न्नु वि (ल घा स न वि (ल घा सं रु व

१३

न म् (धया ४ मा लानु ग डा कू ल र य प द्म वी ऊ ऊ व प ग क म् क्का रु
 टि क न ल स लू रू पा वि ड्म र ड डा क्का ल्थ न म नि मि र्णा कू ल ग न्थ
 म यी वा न क ऊ नी नि म यी स स र्व जा नी य मि ल रं स कि का स म्म
 (म पू र्वा क नि ४ स र्पा क नि र्वा प विं ल त्या रिं ल ना वा का र्था र्प य ल
 ना स र्व रि मा य नु ष्प म्मा ल ना र्था रु न ल रं व वा का र्था प द्म स र्गा दि
 य धि ना य म्मा वि वि र्म रु ना य र्का ऊ (लू स रं पु न ४ स रं य

मलिहि ४३

ययित्वा गगन उड्डयन् ॥ कवाञ्च नमहा विष्णुं कृति नमव
 न्तरु वन् ॥ वरुमात्ता नृनि (ग्र) द्वा स च्चा रा वे कवञ्ज यन् ॥
 ॥ मनु वि (ग) य मात्ता वि (ग) य स्रु के वान् स (ध) य ॥ ७७ ॥ १५६
 ॥ कृ म्म च कुतु ॥ कृ न व धा विरुञ्च न व का ष्ट क षू य
 चा दिय था कर्म का दिस क व र्ज न्म (ध) स्रु वानी (ग) ल ह्व
 विलिख श्रु कृ न मा श्रु वी न न्म र्वे न गुज य द न्मा रा ग मु

निखिद्ध न्ं किमि कृ प ॥ ज्मथ मा ला सस्का न ॥ ॥ ऊँ ज्मथं त्यादि ॥ ज्म
 म्कै क द व ना या ॥ ज्म म्क म लु स मा ला सस्का न म ह्क वि ष्ठा ॥ न्ं नि
 स क ल्यो ल्पान व गु ल क प्पा स म्म र्ण प ह्म र्ण वा पु ल व मा ह् कों
 का व लू ने के के ने के के म नि ग य यित्वा वृक्ष ग र्कि द त्वा मे र्ज स
 पु ल व कृ का र्ण ल ग य यित्वा ॥ वृक्ष ग र्कि क त्वा ॥ ज्म व र्क य
 गु न व क्प प द्मा का र्ज क त्वा मा नि का मूल वी र्ण र्ज स्का प यित्वा न

如

[illegible][illegible]

नामावाक्कापादापुनिष्ठां कुर्यात् ॥ यथाज्ञां दीर्घां यं न लं वलं
 षं सं लं स ॥ जम् क दं वनाया ॥ पो ला वूं रु पा ला ज्ञां दी मि त्या दि
 जम् क दं वनाया जी व वूं रु मि न ॥ ज्ञां दी मि त्या दि जम् क दं
 वनाया ॥ सर्वेन्द्रिया निष्ठां दी मि त्या दि जम् क दं वनाया वा द्य न
 य क्र (प्रा) गुं गु प्या दा पा ला वूं रु ला ग र प स्व र्यं यि नं नि ष न् रु स्या
 ला ग नी मू ल म नुं दा पा द्या दि रि न् प वा ये दं वना न् रु संपू श्र
 थ

१६

॥ ॥ ॐ मां लं मां लं मं लं मां लं सर्वं न त्व स्त नू पि लि ॥ य तु र्व र्ग स्त यि न्य स
 स स्मा न् मं सि धि दा रु वा ॥ वूं र्प नं न मा ला म रि म न् रु यं न ॥ न कि म
 नुं रु मा या वी जा श्रं न मू ले न मा ला न क पृ ष्ठे ॥ न न ॥ पू जे यं न ॥ न
 ना मा र का य क मू ले न क मां कुं मी कु मं ला ना म रि म न् रु यं न ॥ ॥
 न ना मि स्का प नं क त्वा मू ले ना स्त क न ल नं द्र त्वा स म्पा ना श्रं न न ॥ नि
 ॥ क्रि पं न ॥ ॥ ला मा न का धि गु र्वां ऊ पं क य्या न् ॥ न ना द क्रि ला न्द

त्वामात्मा (क्रा) पयं न ॥ ॥ ननु चान्यमन्त्रो न ऊष्य ॥ न ना कल्पयंदिनि
 ॥ ० ॥ नृथ ग्रह ल काले पूजन्त्यनर्ल ननु य ग्रह ल पू चै पूर्वदि
 न उपवास ४ कार्य ॥ कं विन ग्रह ल दिवस न वा प वासं मन्य
 नं ॥ ननु य सा का त्स मू डं ड गमि न्यां न द्यां ना रि मा गु ऊ लं सि र्वा ११
 ऊप कृ य्य ॥ नद रा वं न द्य न न न दि स मू डं सं नि हि त्वा दो पू ज्य
 नी र्थ य व नो द्य नि र्मि न ऊ ला न न वा उ दं न ग न लि कृ म र व

सं ३

या न विव कि न त्वा न्न द स्य न दी स ऊ म स च मू र्वा क ल्प त्व मं वं त्य पि व द नि ॥
 उप वा सा सा म र्थ वि ना पू प वा स ऊ ला वं सिं सि र्वा सा म र्थ ना द न ऊ ला
 ला रं सु ल सं ना पि का र्य ॥ नृ ग य पु थ म क ल्प न हा मा दि उ त्त न क ल्प
 यो म्मु हा मा दि क म पि कृ य्य न ॥ ए ग पा ल म न्कु नु हा र न प्य रि च
 ऊ प द न्नां न त्व मि नि (न स ॥ हा मा द्य न को न दं द नू क ल्प ऊ प ४
 पूर्व व त्का र्य ॥ नृ गु पु यो ग ॥ स्ना त्वा य म् ॥ नृ द्यं त्या दि ॥ ना दू य

